सृजनात्मकता के तत्व या घटक
(Elements or Components of Creativity)

मनोवैज्ञानिक गिलफोर्ड (Guilford) ने केवल चार तत्व अथवा घटक माने हैं :-

(i) तात्कालिक स्थिति से आगे जाने की योग्यता :- (Ability to go beyond the Current Situation)

सृजनात्मकता का पहला तत्व है- आगे की सोचना। जिन मनुष्यों में 'जो है' के आगे 'जो हो सकता है' सोचने की जितनी अधिक योग्यता होती है, उनमें उतनी ही अधिक सृजनात्मकता होती है।

(ii) समस्या की पुनर्व्याख्या (Reexplanation of Problem):-

गिलफोर्ड के अनुसार जिन मनुष्यों में किसी समस्या को नवीन ढंग से व्याख्या करने की जितनी अधिक योग्यता होती है उनमें उतनी ही अधिक सृजनात्मकता होती है। यह सृजनात्मकता का तृतीय तत्व होता है।

(iii) सामन्जस्य (Adjustment):-

जिन मनुष्यों में अपनी नई परिस्थितियों में समायोजन करने की जितनी अधिक योग्यता होती है उनमें उतनी ही अधिक सृजनात्मकता होती है।

(iv) अन्यों के विचारों में परिवर्तन (Changing the thoughts of others):-

गिलफोर्ड के अनुसार सृजनशील व्यक्तियों में दूसरों के विचारों की आलोचना करने एवं उनमें संशोधन करने की योग्यता भी होती है, यह सृजनात्मकता का एक तत्व अथवा घटक होता है।

मनोवैज्ञानिक टॉरेन्स (Torrance) ने भी सृजनात्मकता के चार तत्व माने हैं :-

(a) प्रवाह (Fluency)
(b) नमनीयता (Flexibility)
(c) मौलिकता (Originality)
(d) विस्तरता (Elaboration)

Scanned with CamScanner

इस प्रकार मनोवैज्ञानिकों ने सृजनात्मकता के कुछ अन्य तत्वों की खोज भी की है। वर्तमान में इन्हीं तत्वों की माप द्वारा व्यक्तियों की सृजनात्मक शक्ति का पता लगाया जाता है। अतः यहाँ कुछ तत्वों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है :->

1. संवेदनशीलता (Sensitivity):- जिन व्यक्तियों में सृजनात्मकता होती है, वे संवेदनशील होते हैं, विशेषकर परिवर्तन के प्रति।

2. नवीनता (Novelty):- नवीनता सृजनात्मकता का महत्वपूर्ण तत्व है। जब तक व्यक्ति में नवीनता के प्रति आकर्षण नहीं होगा, वह नवीन सृजन नहीं कर सकता।

3. मौलिकता (Originality):- मौलिकता का सम्बन्ध नवीनता से होता है। किसी वस्तु को नया रूप देने, किसी नये विचार को प्रस्तुत करने अथवा किसी समस्या का निराकरण नवीन विधि से करने की शक्ति को मौलिकता कहते हैं। टॉरेन्स के मतानुसार मौलिकता ही सृजनात्मकता का सबसे महत्वपूर्ण तत्व या घटक है।

4. प्रवाह (Fluency):- किसी समस्या के हल या किसी वस्तु के निर्माण के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहने को प्रवाह कहते हैं। सृजनात्मक व्यक्तियों के चिन्तन में प्रवाह होता है।

5. नमनीयता (Flexibility):- किसी वस्तु को अनेक रूप में प्रस्तुत करने अथवा किसी समस्या के अनेक हल प्रस्तुत करने की क्षमता को नमनीयता कहते हैं। टॉरेन्स के मतानुसार जिन व्यक्तियों में यह क्षमता होती है, उनमें सृजनात्मकता होती है।

6. विस्तारता (Elobration):- किसी विचार को अपने अनुभवों के आधार पर विस्तृत व्याख्या करने को विस्तारता कहते हैं। टॉरेन्स के अनुसार सृजनात्मक व्यक्ति के द्वारा प्रस्तुत व्याख्या में नवीनता और मौलिकता होती है।

7. स्वतन्त्र निर्णय (Self Decision):- सृजनशील व्यक्तियों में आत्मविश्वास होता है, वे आत्मनिर्भर होते हैं और वे स्वतन्त्र रूप से निर्णय लेते हैं।

P.T.O

Scanned with CamScanner

8. पुनर्परिभाषीकरण (Redefinalization):-

पुनर्परिभाषीकरण से तात्पर्य है कि किसी वस्तु, क्रिया अथवा विचार को पूर्व प्रचलित रूप में प्रस्तुत न कर उसे नवीन रूप में प्रस्तुत करना ही सृजनात्मकता का लक्षण है।

9. सृजनात्मक उत्पादन (Creative Production):-

सृजनात्मकता का मूलतत्व सृजनात्मक चिन्तन होता है, इसी से व्यक्ति नये विचार, नवीन रचना तथा नये उत्पादन करने में सक्षम होते हैं।

सृजनात्मकता के सिद्धान्त (Theories of Creativity):-

सृजनात्मकता शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण पक्ष होता जा रहा है। इसका उद्देश्य बालकों में निहित सृजन शक्ति के गुणों को विकसित करना है। सृजनात्मकता की प्रकृति एवं प्रक्रिया को समझाने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने अनेक अध्ययन किए हैं और उनके आधार पर कुछ तथ्य उद्घाटित हुए हैं, जिन्हें सृजनात्मकता के सिद्धान्त कहा जाता है। यहाँ बर्नार्ड मेयर तथा प्रोफेसर मिलन सी शौक के अनुसार कुछ प्रमुख सिद्धान्तों को प्रस्तुत किया जा रहा है:—

1. वंशानुक्रम का सिद्धान्त (Heridity Theory):- इस सिद्धान्त के अनुसार सृजनात्मकता जन्मजात होती है, यह शक्ति बालक को अपने माता-पिता के पित्रैकों (Genes) द्वारा प्राप्त होती है। इस सिद्धान्त के मानने वालों का स्पष्टीकरण है कि इसी कारण भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में सृजनात्मक शक्ति भिन्न-भिन्न प्रकार की तथा विभिन्न मात्राओं में होती है।

2. पर्यावरणीय सिद्धान्त (Environmental Theory):- इस सिद्धान्त का प्रतिपादन मनोवैज्ञानिक एरीटी (Ariete) ने किया है। इस सिद्धान्त के अनुसार सृजनात्मकता केवल जन्मजात नहीं होती अपितु इसे अनुकूल पर्यावरण द्वारा मनुष्य में अन्य गुणों की तरह विकसित किया जा सकता है। इस सिद्धान्त के मानने वालों का

P.T.O.

Scanned with CamScanner